MJ-7
Sem-4

नागरी लिपि : उद्भव और विकास

नागरी या देवनागरी लिपि भारतवर्ष की सर्वाधिक प्रयुक्त लिपि है, जिसका प्रयोग राजस्थान से लेकर मिथिला क्षेत्र तक होता है। उत्तर भारत में नौवीं सदी के लगभग प्राचीन नागरी लिपि का विकास हुआ। इसी प्राचीन नागरी लिपि से आधुनिक नागरी, गुजराती, महाजनी, राजस्थानी, कैथी, मैथिली, असामिया, बंगला आदि लिपियाँ विकसित हुई हैं, जो 15-16 वीं शताब्दी में घटित हुई।

समस्त विश्व में प्राप्त लिपिबद्ध सामग्री के आधार पर माना गया है कि दस हजार ई० पू० से लेकर चार हजार ई० पू० के बीच लिपियों का प्रारम्भिक विकास हुआ होगा। इस विकास-क्रम में विभिन्न प्रकार की लिपियाँ जो दिखती हैं, वे हैं — चित्रलिपि, सूत्रलिपि, प्रतीकात्मक लिपि, भावमूलक लिपि, भाव-ध्वनिमूलक लिपि और ध्वनिमूलक लिपि। विद्वान मानते हैं कि चित्रलिपि से ही प्रायः लिपियों का विकास हुआ है। ध्वनिमूलक लिपि ही लिपि-विकास की उन्नत अवस्था है, जो मुख्यतः अक्षरात्मक और वर्णात्मक होते हैं।

यूरोपीय विद्वानों ने चौथी सदी ई० पू० से पहले भारत में लिपियों का अस्तित्व नहीं माना है, किन्तु सिन्धु घाटी की लिपि के प्रकाश में आने के बाद यह धारणा गलत सिद्ध हुई। प्राचीन भारत में मुख्य रूप से दो लिपियाँ — खरोष्ठी और ब्राह्मी लिपि प्रचलित थीं। ईरानियों की प्राचीन अरमइक लिपि से खरोष्ठी लिपि विकसित हुई, जिसका प्रचलन पश्चिमोत्तर भारत में तीसरी सदी तक दिखता है। दूसरी लिपि - ब्राह्मी भारत की सर्वश्रेष्ठ लिपि रही है और इसी से भारत की अनेक लिपियों का विकास सिद्ध होता है। इसकी उत्पत्ति के संबंध में प्रसिद्ध विद्वान गौरीशंकर हीराचंद ओझा का कथन है — "यह भारतवर्ष के आर्यों का अपनी खोज से उत्पन्न किया हुआ मौलिक आविष्कार है। चाहे इसका कर्त्ता ब्रह्मा माना जाकर इसका नाम ब्राह्मी पड़ा हो, चाहे ब्राह्मणों की लिपि होने से ब्राह्मी कहलाई।"

ब्राह्मी लिपि के प्राचीनतम नमूने चौथी सदी ई० पू० के मिले हैं। आगे चलकर इसके उत्तरी और दक्षिणी रूप अन्तर के साथ दिखने लगे। 350 ई० तक यह लिपि ब्राह्मी कहलाती रही। इसके दक्षिणी और मध्य भारतीय रूप आगे तेलुगू, कन्नड़, कालिंग, तमिल आदि लिपियाँ विकसित हुईं। जबकि, उत्तरी रूप से प्राचीन नागरी, गुप्त लिपि, कुटिल लिपि, शारदा लिपि आदि विकसित हुईं। कुटिल लिपि का प्रचलन नौवीं सदी तक मिलता है। इसी लिपि से शारदा लिपि, जो आधुनिक कश्मीरी, गुरुमुखी लिपियों की जननी है, और प्राचीन नागरी लिपि का विकास हुआ। प्राचीन नागरी लिपि की पूर्वी शाखा से प्राचीन बंग लिपि विकसित हुई तथा पश्चिमी शाखा से गुजराती, कैथी, महाजनी आदि लिपियाँ विकसित हुईं।

नवीं शताब्दी से लेकर अब तक के नागरी लिपि के विकास पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट होता है कि यह अर्ध-अक्षरात्मक लिपि है। इसमें 48 चिह्न हैं, जिनमें से 14 स्वर एवं सन्ध्यक्षर हैं तथा 34 मूल व्यंजन हैं। इन व्यंजनों को ही अक्षर कहते हैं। इसके व्यंजन सात वर्गों — कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य, अर्ध-स्वर, ऊष्म तथा अन्तस्थ में विभजित हैं। इन हजार वर्षों के जीवनकाल में प्रायः सभी अक्षरों में न्यूनाधिक परिवर्तन हुए हैं, किन्तु कुछ उल्लेख्य परिवर्तनों को संकेतित किया जा सकता है। —

① फारसी लिपि के प्रभाव से मध्ययुग में नुक्ता या अधो-बिन्दु का प्रयोग नागरी लिपि में होने लगा। इस कारण कुछ परंपरागत तथा नवागत ध्वनियों के लिए अधोबिन्दु का प्रचलन होने लगा। जैसे — ड-ड़, ढ-ढ़, ख-ख़, ज-ज़, फ-फ़ आदि।

② गुजराती लिपि के प्रभाव से नागरी लिपि का लेखन शिरोरेखा के बिना भी कुछ लोग करते हैं।

③ अंग्रेजी भाषा के प्रचार के साथ ऑफिस, कॉलेज जैसी ध्वनियों के उच्चारण में स्पष्टता के लिए नागरी लिपि में ऑ चिह्न का प्रयोग होने लगा है।

④ नागरी लिपि में विराम-चिह्न के रूप में केवल एक पाई